National Research Journal of Information Technology & Information Science
Volume No: 13, Issue No: 1, Year: 2026 (January-June)
PP: 82-87
ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.9)
Journal Website www.nrjitis.in

छत्तीसगढ़ में चयनित लघु वन उत्पादों के उत्पादन रुझान: इमली, चिरौंजी, महुआ और लाख का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ निधि मिश्रा

सहायक प्राध्यापक

वाणिज्य , सेठ आर सी एस कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय दुर्ग (छग)

सारांश

छत्तीसगढ़ की आदिवासी समुदायों की आजीविका और नकदी अर्थव्यवस्था का आधार लघु वन उत्पाद हैं। तेंदू के पत्तों के अलावा, इमली, चिरौंजी, महुआ के फूल और लाख जैसे कई अन्य वन उत्पाद ग्रामीण आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में 2014 से 2020 के बीच पांच महत्वपूर्ण उत्पादों के उत्पादन रुझानों का विश्लेषण किया गया है, जिसके लिए आंकड़ों में वर्षवार उत्पादन डेटा प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकांश उत्पादों के उत्पादन में गिरावट या अत्यधिक उतार-चढ़ाव देखा गया है, केवल महुआ में ही बाद के वर्षों में सापेक्षिक सुधार हुआ है। इमली और लाख की दोनों किस्मों में स्पष्ट गिरावट देखी गई है, जबकि चिरौंजी में निरंतर वृद्धि के बजाय अस्थिरता दिखाई देती है। ये रुझान पारिस्थितिक तनाव, अनियमित कटाई की स्थिति और कमजोर संस्थागत सहायता प्रणालियों को इंगित करते हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि बेहतर भंडारण, प्रसंस्करण और संगठित विपणन प्रणालियों के बिना, लघु वन उत्पाद अर्थव्यवस्था की स्थिरता और आदिवासी परिवारों की आय सुरक्षा अनिश्चित बनी रहेगी।

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ भारत के सबसे अधिक वन-समृद्ध राज्यों में से एक है और इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा आजीविका के लिए सीधे वनों पर निर्भर है। आदिवासी परिवार मौसमी आधार पर गैर-लकड़ी वन उत्पादों के संग्रहण पर बहुत अधिक निर्भर हैं। कृषि के विपरीत, जो वर्षा और भूमि स्वामित्व पर निर्भर है, वन उत्पादों का संग्रहण भूमिहीन परिवारों को भी सुलभ रोजगार प्रदान करता है।

वन उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला में, इमली, चिरौंजी, महुआ के फूल और लाख का विशेष महत्व है। इन उत्पादों का उपयोग भोजन, औषधि, प्रसंस्करण उद्योगों के लिए कच्चे माल और व्यापारिक वस्तुओं के रूप में किया जाता है। महुआ एक पौष्टिक भोजन और किण्वन आधार के रूप में कार्य करता है। इमली का व्यापक रूप से मसाले और परिरक्षक के रूप में उपयोग किया जाता है। चिरौंजी एक उच्च मूल्य वाला सूखा मेवा है जिसका उपयोग मिठाइयों और कन्फेक्शनरी में किया जाता है। लाख एक औद्योगिक कच्चा माल है जिसका उपयोग वार्निश, पॉलिश, सौंदर्य प्रसाधन और हस्तशिल्प में किया जाता है।

इन उत्पादों की स्थिरता सीधे आदिवासी परिवारों की आर्थिक स्थिरता निर्धारित करती है। इसलिए, समय के साथ उत्पादन पैटर्न का अध्ययन करने से वन क्षेत्रों में पारिस्थितिक स्थितियों, संस्थागत प्रभावशीलता और आजीविका सुरक्षा के बारे में जानकारी मिलती है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ में 2014 से 2020 के बीच चयनित लघु वन उत्पादों के उत्पादन रुझानों का विश्लेषण करना, विभिन्न वन उत्पादों के बीच स्थिरता की तुलना करना और जनजातीय आजीविका तथा वन अर्थव्यवस्था की स्थिरता पर इसके प्रभावों को समझना है।

पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। यह द्वितीयक वर्षवार उत्पादन आंकड़ों पर आधारित है, जिन्हें ग्राफ़ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आंकड़ों में दर्शाई गई प्रवृत्ति रेखाओं की व्याख्या उत्पादन की दीर्घकालिक गति को समझने के लिए की गई

© Copyright @ Authors

ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.9)
Journal Website www.nrjitis.in

है। विभिन्न उत्पादों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण करके यह निर्धारित किया गया है कि किन वस्तुओं की मांग घट रही है, स्थिर है या उतार-चढ़ाव दिखा रही है।

इमली उत्पादन का रुझान

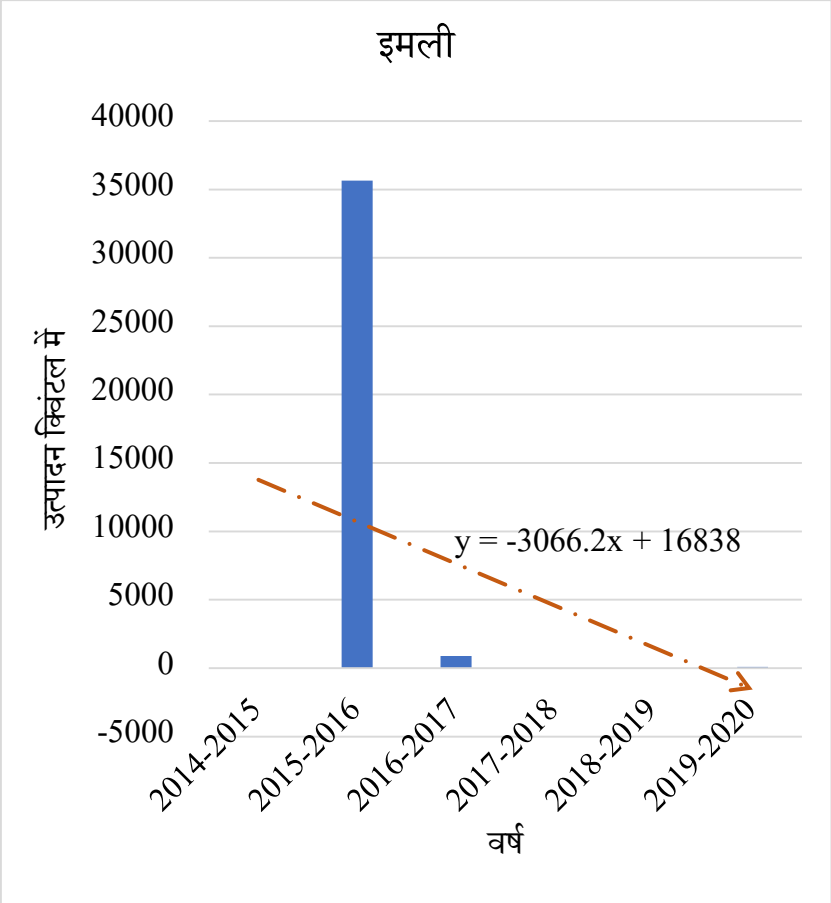

सभी उत्पादों में इमली के उत्पादन में सबसे तीव्र गिरावट देखी गई है। ग्राफ से पता चलता है कि 2015 से 2016 के आसपास इसका उत्पादन बहुत अधिक था, जिसके बाद के वर्षों में इसमें भारी गिरावट आई। नकारात्मक रुझान रेखा अध्ययन अवधि के दौरान उत्पादन में निरंतर कमी को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

यह गिरावट अनियमित पुष्पन चक्र, जलवायु परिवर्तनशीलता और समय से पहले कटाई के कारण हो सकती है। इमली के पेड़ वर्षा के पैटर्न और तापमान में बदलाव के प्रति संवेदनशील होते हैं। फूल आने के दौरान सूखे की स्थिति या बेमौसम बारिश से उपज में काफी कमी आती है। एक अन्य संभावित कारण पर्याप्त पुनर्जनन प्रथाओं के अभाव में बढ़ती बाजार मांग के कारण अत्यधिक दोहन है।

इमली के गिरते उत्पादन का ग्रामीण आय पर सीधा प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह सबसे अधिक बिकने वाले खाद्य वन उत्पादों में से एक है। कम उपलब्धता से घरेलू खपत और बाजार बिक्री दोनों में कमी आती है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.9)
Journal Website www.nrjitis.in

चिरौंजी उत्पादन का रुझान

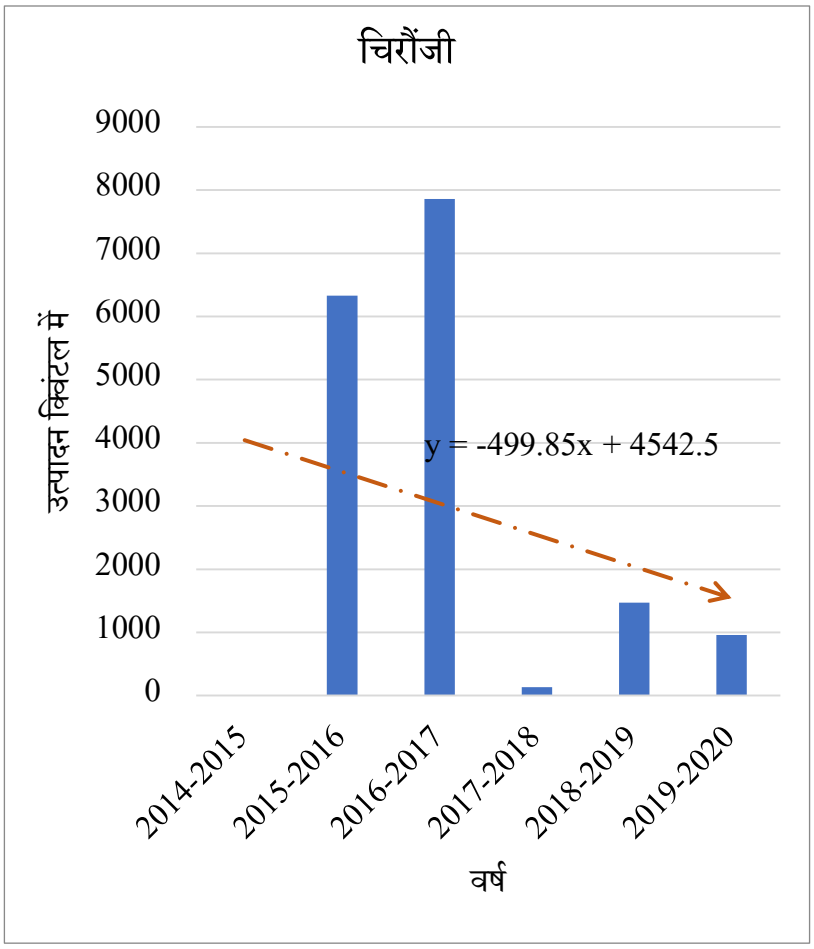

चिरौंजी का उत्पादन स्थिर नहीं बल्कि अस्थिर है। 2015 से 2017 के दौरान उत्पादन में वृद्धि हुई, लेकिन उसके बाद इसमें तेज़ी से गिरावट आई, जिसके बाद के वर्षों में आंशिक सुधार हुआ। नकारात्मक रुझान रेखा कभी-कभार वृद्धि के बावजूद सामान्य रूप से गिरावट की प्रवृत्ति दर्शाती है।

चिरौंजी के बीजों को सावधानीपूर्वक एकत्र और संसाधित करना आवश्यक है। अनुचित कटाई से वृक्षों के पुनर्जनन को नुकसान पहुँचता है। इसके अलावा, चिरौंजी के वृक्षों का फलने का चक्र स्वाभाविक रूप से अनियमित होता है, जो वर्ष-दर-वर्ष उतार-चढ़ाव का कारण बनता है।

चूंकि चिरौंजी एक उच्च मूल्य वाला उत्पाद है, इसलिए इस तरह की परिवर्तनशीलता से आय में अनिश्चितता उत्पन्न होती है। आदिवासी परिवार इसे आय के एक स्थिर स्रोत के रूप में नहीं देख सकते हैं, और व्यापारियों को भी आपूर्ति में अनियमितता का सामना करना पड़ता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.9)
Journal Website www.nrjitis.in

महुआ उत्पादन का रुझान

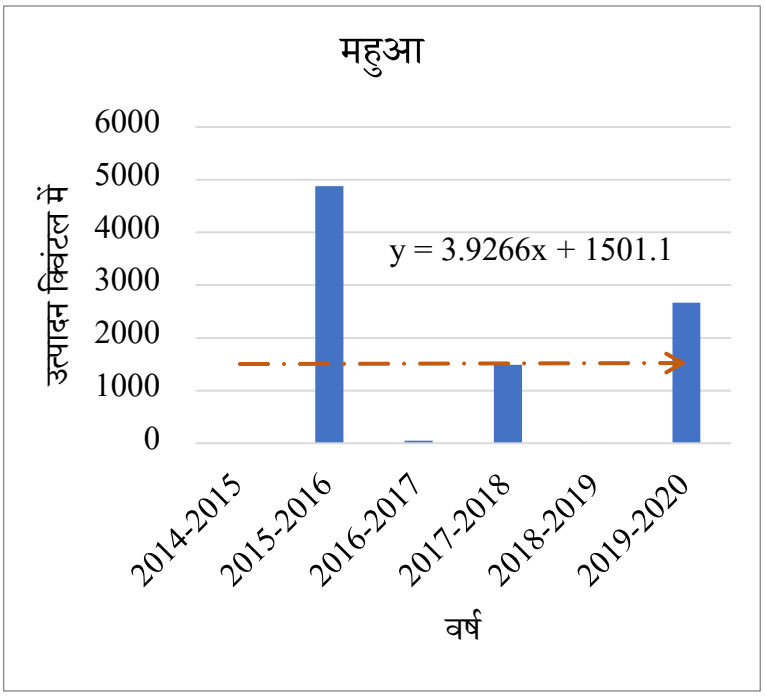

अन्य उत्पादों की तुलना में महुआ का पैटर्न अलग है। उत्पादन में काफी उतार-चढ़ाव के बावजूद, दीर्घकालिक रुझान अपेक्षाकृत स्थिर प्रतीत होता है, जिसमें बाद के वर्षों में थोड़ी वृद्धि देखी गई है। 2016 से 2017 के आसपास गिरावट के बाद, उत्पादन में फिर से वृद्धि हुई।

महुआ के पेड़ आदिवासी क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाए जाते हैं और सांस्कृतिक रूप से संरक्षित हैं। समुदाय पारंपरिक रूप से इन पेड़ों का संरक्षण करते हैं क्योंकि ये खाद्य और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। संभवतः यही सामुदायिक संरक्षण अन्य उत्पादों की तुलना में इसकी अपेक्षाकृत बेहतर स्थिरता का कारण है।

हालांकि, साल-दर-साल होने वाला तीव्र बदलाव जलवायु परिस्थितियों पर निर्भरता को दर्शाता है। महुआ में फूल आना वसंत ऋतु में तापमान के प्रति अत्यंत संवेदनशील होता है। यहां तक कि मौसम में मामूली बदलाव भी उपज को प्रभावित करते हैं।

लाख उत्पादन का रुझान

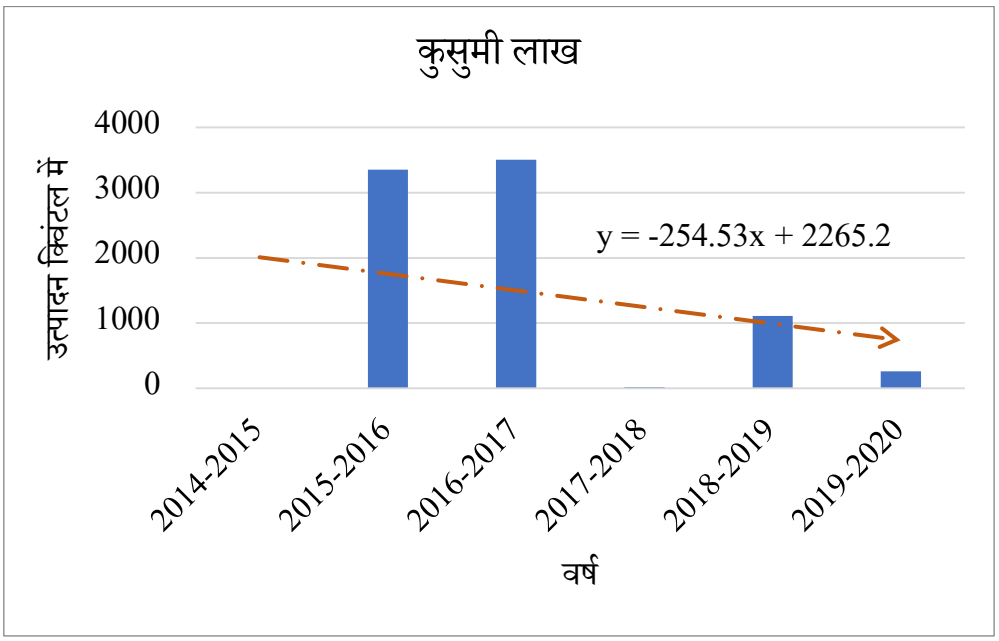

© Copyright @ Authors

ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.9)
Journal Website www.nrjitis.in

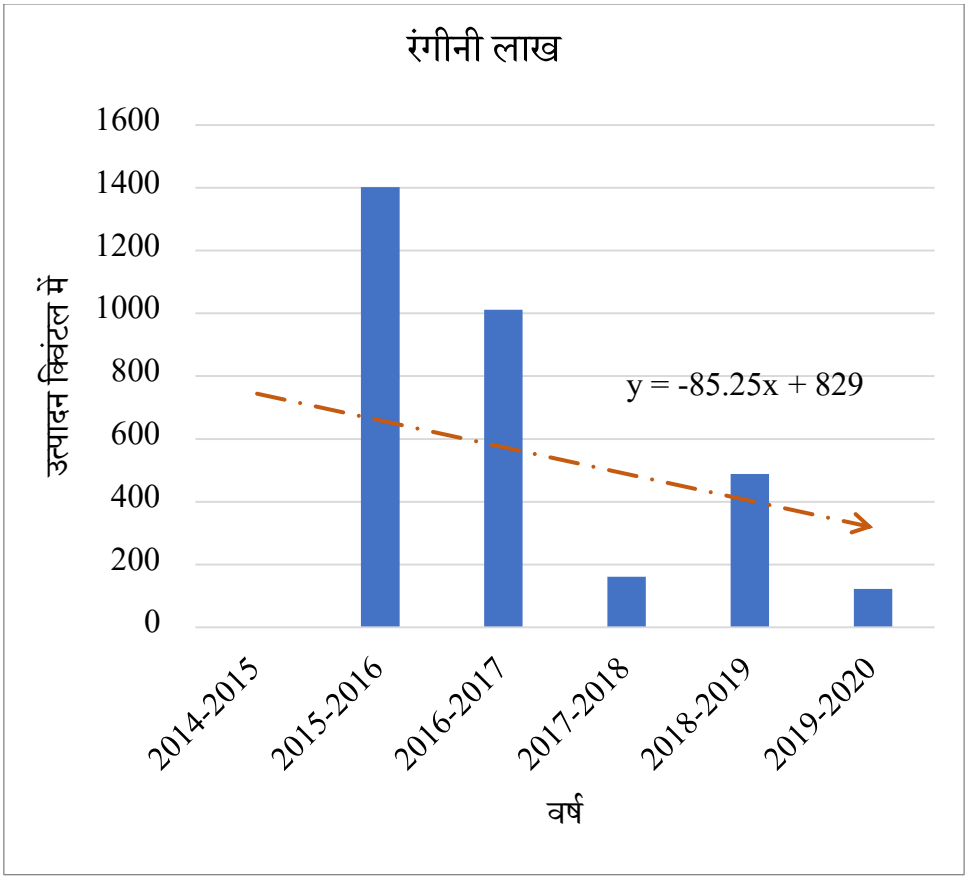

छत्तीसगढ़ में उत्पादित अन्य महत्वपूर्ण वनोपज उत्पाद (संग्रहण क्विंटल में) में प्रवृत्तियों का विश्लेषण

रंगीन लाख और कुसुमी लाख दोनों में लगातार गिरावट देखी जा रही है। शुरुआती वर्षों के बाद उत्पादन में लगातार कमी आती है, हालांकि कुछ समय के लिए इसमें मामूली सुधार ही देखने को मिलता है। लाख की खेती के लिए उपयुक्त वृक्षों और सावधानीपूर्वक प्रबंधन की आवश्यकता होती है। वनों की कटाई, आग और भूमि रूपांतरण के कारण उपयुक्त वृक्षों की संख्या में कमी से उत्पादन पर काफी असर पड़ता है। एक अन्य कारण पारंपरिक ज्ञान का क्षय है। लाख की खेती में ब्रूड लाख का टीकाकरण और कीट प्रबंधन जैसे तकनीकी कौशल शामिल हैं। जैसे-जैसे युवा पीढ़ी वन आधारित व्यवसायों से दूर होती जा रही है, ये कौशल धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। लाख उत्पादन में गिरावट विशेष रूप से गंभीर है क्योंकि लाख एक औद्योगिक कच्चा माल है जिसका बाजार मूल्य और निर्यात क्षमता बहुत अधिक है। इसकी गिरावट आर्थिक अवसरों की हानि को दर्शाती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

सभी उत्पादों की तुलना करने पर तीन स्पष्ट रुझान सामने आते हैं। पहला, अधिकांश उत्पाद सतत वृद्धि के बजाय गिरावट या अस्थिरता प्रदर्शित करते हैं। दूसरा, पारिस्थितिक निर्भरता अत्यधिक है, जिससे उत्पादन जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रति संवेदनशील हो जाता है। तीसरा, तेंदू के पत्तों के अलावा अन्य उत्पादों के लिए संस्थागत विपणन समर्थन कमजोर है।

सांस्कृतिक संरक्षण के कारण महुआ अपेक्षाकृत स्थिर बना हुआ है, जबकि इमली और लाख में संरचनात्मक गिरावट देखी जा रही है। चिरौंजी इन दोनों के बीच स्थित है, जिसमें अनियमित उतार-चढ़ाव देखे जाते हैं।

इससे पता चलता है कि वन अर्थव्यवस्था कमजोर है क्योंकि यह व्यवस्थित वृक्षारोपण, प्रसंस्करण या भंडारण अवसंरचना के बिना प्राकृतिक पुनर्जनन पर निर्भर है।

आजीविका पर प्रभाव

अनियमित उत्पादन का सीधा असर अनियमित आय पर पड़ता है। आदिवासी परिवार आवश्यक वस्तुओं की खरीद के लिए मौसमी आय पर निर्भर रहते हैं। उत्पादन घटने पर कर्ज बढ़ जाता है और पलायन अनिवार्य हो जाता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2350-1278
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.9)
Journal Website www.nrjitis.in

महिलाएं विशेष रूप से प्रभावित होती हैं क्योंकि वे महुआ और इमली की मुख्य संग्राहक होती हैं। कम उपज का मतलब है आर्थिक आत्मनिर्भरता में कमी। पोषण सुरक्षा भी कम हो जाती है क्योंकि कई वन उत्पादों का सेवन भोजन के रूप में किया जाता है।

इसके अलावा, आपूर्ति में उतार-चढ़ाव सौदेबाजी की शक्ति को कमजोर करता है। उत्पादन कम होने पर व्यापारी खराब गुणवत्ता या सीमित मांग का हवाला देते हुए और भी कम दाम लगाते हैं।

निष्कर्ष

उत्पादन प्रवृत्तियों के विश्लेषण से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में लघु वन उपज अर्थव्यवस्था अस्थिरता का सामना कर रही है। महुआ में आंशिक स्थिरता को छोड़कर, अधिकांश उत्पादों का उत्पादन घट रहा है या उतार-चढ़ाव दिखा रहा है। इमली और लाख में गिरावट विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि ये आय के महत्वपूर्ण स्रोत हैं और इनकी बाजार में प्रबल मांग है।

समस्या केवल पारिस्थितिक नहीं बल्कि संस्थागत भी है। पुनर्जनन नियोजन का अभाव, अपर्याप्त तकनीकी प्रशिक्षण और कमजोर विपणन सहायता प्रणाली वन आधारित आजीविका की विश्वसनीयता को कम कर रही है। यदि वर्तमान रुझान जारी रहे, तो जनजातियों की वनों पर निर्भरता आजीविका में सुधार के कारण नहीं, बल्कि वन आय के अपर्याप्त होने के कारण कमजोर हो सकती है।

संरक्षण, वैज्ञानिक कटाई, मूल्यवर्धन और संगठित विपणन को संयोजित करने वाली एक व्यापक रणनीति आवश्यक है। इन पहलुओं को मजबूत करने से छत्तीसगढ़ में लघु वन उपज को एक अनिश्चित मौसमी गतिविधि से एक स्थिर और टिकाऊ ग्रामीण आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है।

REFERENCES

1. Mahapatra, A. K. and Tewari, D. D. (2005). Importance of non timber forest products in rural livelihood security: Evidence from India. *Forest Policy and Economics*, 7(3), 447 to 458.
2. Government of India, Ministry of Tribal Affairs. (2013). *Minimum Support Price Scheme for Minor Forest Produce: Operational Guidelines*. New Delhi.
3. NABARD (National Bank for Agriculture and Rural Development). (2017). *Value Chain Financing of Minor Forest Produce in Central India*. Mumbai.
4. TRIFED (Tribal Cooperative Marketing Development Federation of India Ltd.). (2016). *Van Dhan Vikas Kendras and Value Addition of Minor Forest Produce*. New Delhi.

© Copyright @ Authors